राजा राममोहन राय (1772-1833 ई.)

बंगाल में प्रारंभ हुए समाज सुधार आंदोलनों का नेतृत्व राजा राममोहन राय ने किया। इन्हें भारत में नवजागरण का अग्रदूत, सुधार आंदोलनों का प्रवर्तक, आधुनिक भारत का पिता, नवप्रभात का तारा एवं भारतीय पत्रकारिता का जनक कहा जाता है। राजा राममोहन राय प्राच्य और पाश्चात्य चिंतन के मिले-जुले रूप के प्रतिनिधि थे।

- 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म सभा की स्थापना कलकत्ता में की, जिसे बाद में 'ब्रह्म समाज' कहा गया। ब्रह्म समाज के मुख्य उद्देश्य 'हिंदू धर्म' में सुधार लाना, सभी धर्मों की अच्छाइयों को अपनाना, मूर्ति पूजा का विरोध, एक ब्रह्म की पूजा का उपदेश देना आदि थे। उन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन कर धर्मों की आपसी एकता पर ज़ोर दिया। ब्रह्म समाज के सिद्धांतों और दृष्टिकोण के मुख्य आधार थे- मानव-विवेक (तर्क-शक्ति), वेद व उपनिषद्।
- राजा राममोहन राय धार्मिक, दार्शनिक व सामाजिक दृष्टिकोण में इस्लाम के एकेश्वरवाद, सूफ़ीमत के रहस्यवाद, ईसाई धर्म की आचार शास्त्रीय नीतिपरक शिक्षा और पश्चिम के आधुनिक देशों के उदारवादी-बुद्धिवादी सिद्धांतों के समर्थक थे।
- सामाजिक क्षेत्र में राजा राममोहन राय हिंदू समाज की कुरीतियों- सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जातिवाद, बाल विवाह आदि के घोर विरोधी थे। विधवा पुनर्विवाह का इन्होंने समर्थन किया।
- धार्मिक क्षेत्र में उन्होंने मूर्ति पूजा की आलोचना करते हुए, अपने पक्ष को वेदोक्तियों के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास किया। इन्होंने कर्मकांड का विरोध किया तथा धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या के लिये पुरोहित वर्ग को अस्वीकार किया। उन्होंने यह भी कहा कि अगर धर्म सामाजिक सुधार की अनुमति नहीं देते तो उसे बदल दिया जाना चाहिये।
- एकेश्वरवादी मत के प्रचार हेतु उन्होंने 1815 में 'आत्मीय सभा' का भी गठन किया। 1822 में फारसी भाषा में उन्होंने मिरात-उल-अखबार (मिरातुल अखबार) का प्रकाशन किया। कलकत्ता यूनिटेरियन कमेटी का गठन 1823 में राजा राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर और विलियम एडम द्वारा किया गया।
- 1821 में बांग्ला भाषा में 'संवाद कौमुदी' का भी प्रकाशन किया। सती-प्रथा के विरोध के लिये इन्होंने अपनी इस पत्रिका का उपयोग किया।
- राजा राममोहन राय ने डच घड़ीसाज डेविड हेयर के सहयोग से 1817 में कलकत्ता में 'हिंदू कॉलेज' की स्थापना की। 1825 में उन्होंने कलकत्ता में 'वेदांत कॉलेज' की स्थापना की।